International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 429-430

डॉ0 परशुराम शुक्ल के बाल काव्य में राष्ट्रीयता

उपासना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

साहित्य और समाज घनिष्ट रूप से संबंधित है। बच्चे समाज का भविष्य होते है जो भावी समय में स्वस्थ समाज का निर्माण करते है। बच्चों को उस स्वस्थ समाज के निर्माण करने की शिक्षा देता है। – बाल साहित्य

बाल काव्य का सृजन प्राचीन काल से किया जा रहा है जिसमें पंचतन्त्र व हितोपदेश की कहानियां प्रमुख है। वर्तमान समय में बहुतायत से बाल साहित्य लिखा जाने लग गया है। उन्हीं बाल साहित्यकारों में से एक प्रमुख बाल साहित्यकार डॉ॰ परशुराम शुक्ल है। इन्होंने बाल काव्य पर अपनी लेखनी को सुशोभित किया है। अब तक इनकी लगभग 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इनकी बाल कविताओं में राष्ट्रीयता, मानव धर्म, नैतिकता को देखा जा सकता है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना को अधिक बल मिला है। इनकी कविताएं एक और उच्च आदर्श प्रस्तुत करती है तो दूसरी और समाज का यथार्थ चित्रण करती है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्री परशुराम शुक्ल हिन्दी साहित्य के सक्षम हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म कानपुर के मंगलीप्रसाद व रामश्री के घर में हुआ। माता रामश्री की प्रारम्भिक शिक्षा ननिहाल में ही हुई। ये बचपन से बाल कहानियां को सुनने व लिखने में अपनी शक्ति रखते है।

शालाओ में बिना भेद के
ज्ञान कभी पा सकते हो।
अपनी क्षमता विकसित करके,
ऊंचे पद तक जा सकते हो।
इतना मिले इस धरती पर
जाम ना कोई विदेश।
प्रभु ! हो ऐसा भारत देश,
प्रभु। हो ऐसा भारत देश।

इस कविता में कवि ने व्यक्तिगत रूप से ईश्वर से अपने लिये कुछ न मांगकर अपने देश के लिये अपने देशवासियों के लिए और अपने प्रिय बच्चों के लिए आदर्श भविष्य की कामना की है।

शक्ति एकता में है इतनी,
सबल शत्रु थर्राता है।
इस ताकत के आगे बच्चों,
ईश्वर भी झुक जाता है।
यह तो एक अमोघ अस्त्र है।
ऐसा अपने मन में मानो,
शक्ति एकता की पहचानो।
बच्चो मेरा कहना मानो,
शक्ति एकता की पहचानो।

एकता की शक्ति बाल कविता में शुक्ल जी ने आपसी भेदभाव को मिटाकर देश के लिए एकजुट होकर कार्य करने की प्रेरणा दी है। कवि कहता है कि एकता इतनी शक्तिशाली होनी चाहिए जिसमें कोई अन्य व्यक्ति आकर फुट न डाल सके। एकता की शक्ति समूह में होती है।

एकता के बल पर बड़े से बड़े उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस कविता में शुक्ल जी ने इसी बात को समझाने का सरल रूप प्रस्तुत किया था।

बच्चो नियमित पढने जाओ,
पढ लिख कर कुछ बन जाओ।
माता और पिता को अपने,
जीवन सुख बनाओ।
अभिनव.....
अपने नेताओं को जानो,
अच्छी तरह इन्हें पहचानो,
चुन कर देशभक्त नेता तुम,
देश महान बनाओ।
अभिनव.....
अमेरिका जैसे बन जाओ
पाक, चीन को सबक सिखाओ।
भारत का हो मस्तक ऊंचा
ऐसा कुछ कुछ कर जाओ।
अभिनव.....
भारत माता की बगिया में
अभिनव फूल खिलाओ।

अभिनव फूल खिलाओ कविता के माध्यम से शुक्ल जी ने बच्चों में राष्ट्रीयता की भावना को भरा है जिसमें भारत देश में सुशासन और देशभक्ति की लहर चल पड़े। भारत विश्व में अग्रिम पंक्ति में अस्तित्व को स्वीकार कर सके। कविता में भारत के बच्चों के मन में अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और भक्ति का जोश जगाया है।

अभिनव फूल खिलाओ कविता बच्चों को अत्यधिक प्रभावित कर सकी है इसमें बच्चे के भावों को सरलता के साथ देश की शान का वर्णन किया गया था। शुक्ल जी ने बाल साहित्य में ऐसी लेखनी में अपना अमुल्य योगदान दिया है।

जब हम हममें दम है,
हमको आगे बढना है।
जिसको पढ़ना–लिखना आता,
अपना जीवन सुखी बनाता।
जीवन में कुछ पाना हो तो,
हमको पढना है।

आगे.....
संघर्षों से मत घबराओ
तुफानों से जा टकराओ
निश्चय करके अपने मन में
उपर चढना है।
आगे.....
जो बनना है आज बनो तुम
भारत माँ का ताज बनो तुम
एक स्वप्न पूरा होते ही
दुजा गढना है।
आगे.....
जब तक हममें दम है।
हमको आगे बढना है।

"आगे बढ़ना है" कविता में कवि ने बच्चों को निरंतर अपने पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया है। व्यक्ति के लिये कार्य करते रहना ही समाज और देश के लिए अत्यावश्यक होता है जो बच्चों को जन्म से ही बतलाकर उसे उसी राह पर चलाया जा सकता है। ये संस्कार बच्चे में शिक्षा के माध्यम से ही दिया जा सकता है तभी शुक्ल जी ने आगे बढ़ना कविता में बच्चों को अपने कर्म के रास्ते में हमेशा आगे बढ़ने की शक्ति को उजागर किया है ताकि यही शक्ति आगे चलकर भारत के लिए देश भक्ति बनने में सिद्ध होगी।

आओ बच्चो। तुम्हें सिखाएं।
गाथा एक पुरानी।
जिसने गोरो को ललकारा,
वह झांसी की रानी।
मुंह बोली बहना नाना की,
साहस हिम्मतवाली
वह तलवार चलाती ऐसे
वार न जाता खाली।
लेकिन गोरे डलहोजी को
रास नहीं वह आई।
हडप नीति से उसने झांसी
अपने राज मिलाई।
————————————
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया
को भी सबक सिखाया
और दुष्ट हिरोज तलक को
उसने मार भगाया।

शुक्ल जी ने रानी लक्ष्मीबाई कविता में रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन बच्चों की सरल शब्दावली में किया है। जिससे बच्चे रानी की साहसिकता का परिचय आसानी से कर सकते है। बच्चे रानी लक्ष्मीबाई की देशभक्ति से प्रेरित होकर अपने मन में देश के प्रति प्रेम को अधिक रख सकेंगे। बच्चों की वीरतापूर्ण कविताओं को रुचि पूर्ण पढने है और उसमें जो शिक्षा का भाव होता है उसे ग्रहण भी कर सकते है।

आओ बच्चो आज तुम्हें हम,
एक बात बतलाते है।
शक्ति कलम में होती कितनी,
यह रहस्य समझाते है।
कलम ज्ञान के दीप जलाकर
अंधकार को हरती है।
भाव विचार नये प्रस्तुत कर
जय आलोकित करती है।
सदा कलम ने ताकत दी है।
बरछी तीर कटारो को।
कलम झुका सकती चरणों पर
तूफानी तलवारों को
लेखक, कविगण और विचारक
सभी कलम के गुण गाते
करती जब विद्रोह कलम तो
शासन तंत्र उखड जाते है।
कलम उगलती है अंगारे,
अमृत का रसपान कराती
शक्ति कलम की इस धरती पर
अपना अभिनव रूप दिखाती।

"चारो खाने चित" की सभी बाल कविताएं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत है। इस काव्य समूह की कविताएं बच्चों ने बहुत पसंद की और अपने पढने में सम्मिलित कर लिया। ये कविताएं कथ्य और शिल्प की दृष्टि से स्तरीय है। कवि ने इसमें अपने राष्ट्र भाव को जगाया है। डॉ॰ परशुराम शुक्ल जी ने अपने काव्य साहित्य में भारतीय राष्ट्रीय चिन्हों को सम्मिलित कर, उन पर कविताएं की है। जिससे बच्चे अपने राष्ट्रीय चिन्ह पशु, पक्षी, वृक्ष इत्यादि का रुचि के साथ ज्ञान कर सके और इन चिन्हों के प्रति आदर भाव का नजरिया अपना सके, जिससे भारतीय संस्कृति और राष्ट्र की अखंडता भविष्य में बनी रहे। शुक्ल के काव्य में हम बच्चों की भावना को अत्यधिक रूचिकर बनाया है जिससे बच्चे अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान का भाव जगा सके और अपने हृदय में भारतीय राष्ट्रीयता का गुणगान कर सके।

संदर्भ

1. परशुराम शुक्ल – कामना
2. परशुराम शुक्ल – एकता की शक्ति
3. परशुराम शुक्ल – तितली
4. परशुराम शुक्ल – उठो सवेरे
5. परशुराम शुक्ल – विजय पर्व
6. परशुराम शुक्ल – हमारे प्राकृतिक प्रतीक
7. परशुराम शुक्ल – चारो खाने चित
8. परशुराम शुक्ल – तिरंगा
9. परशुराम शुक्ल – कलरव
10. परशुराम शुक्ल – बाल सतसई
11. परशुराम शुक्ल – प्रतिनिधि बाल कविताएं
12. परशुराम शुक्ल – रानी लक्ष्मीबाई
13. राजेन्द्र कुमार – समकालीन हिन्दी बाल कविता
14. सुधा मिश्रा – हिन्दी बाल कविता में नए प्रयोग
15. परशुराम शुक्ल – हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन